IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय कला मे नारी शक्ति का सौंदयात्मक अध्ययन

खुशबू कुशवाहा
शोधार्थी – ड्राइंग एण्ड पेंटिंग
आ.न.दे.न.नि. महिला महाविद्यालय,कानपूर
(छत्रपति शाहू जी महराज विश्वविद्यालय,कानपुर)

प्रो० राज किशोरी सिंह
शोध निर्देशिका / प्रो० – चित्रकला विभाग
आ.न.दे.न.नि. महिला महाविद्यालय,कानपूर

सारांश–

नारी,सृष्टि की अनमोल एंव सौंदर्यमयी रचना है जो कोमल होते हुये भी विशाल मन, अद्वितीय तन, व सहनशीलता की प्रतिमूर्ति है। अतः भारतीय संस्कृति में नारी को देवी के रूप में स्तुति की गई है।

[1]"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता"[1]

अर्थात् जहाँ नारीयों की पूजा की जाती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। अतः नारी शक्ति का सौंदर्यात्मक अंकन प्राचीन काल से देखा जा सकता है, और ऐसी ही अभिव्यक्ति **रविंद्र नाथ टैगोर ने** अपनी रचना **मानसी गीत** में किया है, जिसमे वे **नारी को भगवान की अद्भुत कृति मानते हैं**। भारतीय दर्शन में दो शब्द अत्यंत प्रमुखता से मिलते हैं – **पुरूष और प्रकृति।** यहाँ पुरूष का अर्थ स्पष्ट है, और प्रकृति शब्द का संबंध नारी से है। यह पूर्ण रूप से सत्य है कि पुरूष और नारी दोनों से ही जीवन का सृजन एंव संतुलन संभव है। भारतीय कला इतिहास में नारी चित्रण प्रमुख विषय रहा है।

हड़प्पा – मोहनजोदड़ो की मूर्तियों में नारी आकृतियों को अत्यंत शालीनता के साथ उर्वरता और कल्याण के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। हम देखे तो **सिंधु सभ्यता से लेकर बौद्ध काल, मध्य काल, राजस्थानी, पहाड़ी और मुगल शैलियों सहित आधुनिक काल** के विभिन्न रूपों में नारी अंकन प्राप्त होता है, जहाँ पर नारी को कहीं **माँ** के रूप में तो कहीं **राग–रागिनी** एंव कहीं **शक्तियों के स्वरूपों में** सुंदर

चित्रों का अंकन मिलता है। बौद्ध काल में नारी को ज्ञानी, सहिष्णु के रूप में स्वीकार किया है। इसके अतिरिक्त हम अन्य परम्परा जैसे **लोक कला एंव हिंदू साहित्य** की ओर एक दृष्टि डाले तो यह भी सत्य है कि विश्व में नारी शक्ति के प्रति जो अवधारणा बनाई गयी है, उसके केंद्र में समाजशास्त्री दृष्टि प्रमुख रही है। इसीलिए नारी शक्ति के सौंदर्य एंव स्वरूप की झलक हम लोक कला परम्परा एंव हिंदू धर्म के पावन पर्व **नवरात्रि में देवी की शक्ति नवदुर्गा** तथा आधुनिक काल के प्रमुख **कलाकारों के चित्रों** में देखा जा सकता है, जिसे विभिन्न कलाकारों ने प्रतीकों सहित अपनी अभिव्यक्तियों को चित्रों के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत किया।

बीज शब्द– नारी, समाज, शक्ति, भारतीय, देवी, संस्कृति, सौंदर्य।

उद्देश्य –

- भारतीय कला समाज में नारी शक्ति के सौंदर्यात्मक अध्ययन को प्रस्तुत करना है, जो कला में सामाजिक एंव संस्कृति उद्देश्यों को उजागर करती है और साथ ही नारी शक्ति के स्वरूपों को समझाने का भी प्रयास करती है।
- चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला एंव साहित्य में नारी शक्ति की अभिव्यक्ति को स्पष्ट करना।
- नारी शक्ति का प्रतीक दुर्गा के स्वरूपों से अवगत कराना।
- भारतीय कला में नारी माात्र सौंदर्य की प्रतिमर्ति नहीं है अपितु ज्ञान, करूणा, मातृत्व की प्रतिमूर्ति भी है।
- भारतीय चित्रकला में विभिन्न कलाकारों के माध्यम से नारी शक्ति के स्वरूपों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना।
- नारी के बिना कला संस्कृति और सभ्यता का कोई अस्तित्व नहीं है, यह व्यक्त करना।
- दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, काली एंव समस्त देवियों के स्वरूप के माध्यम से नारी के ऐश्वर्य, ज्ञान, शक्ति और समृद्धि की व्याख्या करना।

प्रस्तावना –

संम्पूर्ण संसार में नारी **सुंदर, आकर्षक और मोहक** मानी गई है। वह पकृति की निरूपम कृति है, जो विभिन्न रूप धारण करती है। जिसकी शक्ति कल्पना के परे है। नारी –सृष्टि के प्रारम्भ से ही अनन्त गुणों का आगार रही है। अतः वह **करूणा, ममता, क्षमा, सहनशीलता, त्याग, प्रेम, व वात्सल्य की प्रतिमूर्ति** भी मानी जाती है। भारतीय संस्कृति में नारी को देवी के रूप में स्तुती की गई है –

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता"

अर्थात् जहाँ नारीयों की पूजा की जाती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। हम देखे तो प्राचीन काल से ही भारतीय कला इतिहास में नारी का चित्रण एक मुख्य विषय रहा है। **हड़प्पा और मोहनजोड़ो** की मूर्तियों में नारी आकृतियों को अत्यंत शालीनता के साथ नग्नता एंव नृत्य मुद्रा में उर्वरता और कल्याण के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वैसे भारतीय कला में प्रत्येक शब्द का इतिहास है और उसका स्वतंत्र अस्तित्व

है, जो अपने वाच्य के स्वरूप का भी संकेत करता है। जैसे नारी अर्थ के बोधक शब्द भी नारी के स्वरूपों पर प्रकाश डालते हैं। **महादेवी वर्मा** के अनूसार **पूरूष प्रतिरोधमय शोध है, स्त्री क्षमा! पुरूष शुष्क कर्तव्य है, स्त्री सरस सहानुभूति। पुरूष ब्रह्मा है, तो स्त्री हृदय की प्रेरणा।**

स्पष्ट है, और प्रकृति शब्द का संबंध नारी से है। यह पूर्ण रूप से सत्य है कि पुरूष और नारी दोनों से ही जीवन का सृजन एंव संतुलन संभव है। नारी का अंकन प्राचीन काल **(प्रागैतिहासिक काल**) से देखने को मिलता है और वहीं से ही स्त्री पुरूष का रहन सहन चित्रांकन एंव विभिन्न उत्पत्तियों सहित देखा जा सकता है, जिसका प्रमाण आगे चलकर आद्यऐतिहासिक कोल (**सिंधु घाटी सभ्यता**) में परिलक्षित होता है।

सिंधुघाटी की सभ्यता –

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा संस्कृति से प्राप्त **मातृ देवी (चित्र संख्या 01**) जो खड़ी मुद्रा में अलंकरण युक्त मूर्ति है। सिर पर उपर उठा हुआ चौड़ा पंखनूमा आवरण अंकित है और हाथ पैर को सीधे डण्डेनुमा दर्शाया गया है, जिनमें अंगुलियों का अंकन नहीं हुआ है। साथ ही मोहनजोदड़ो से प्राप्त **मृण्मूर्ति (चित्र संख्या 02)** भी मातृदेवी की भांति है, जो एक नारी की मुर्ति है। जिसके गर्दन में कंठा (चोकर) भुजबंद और गले में लंबे हार पहनाए गए हैं , जो छाती तक लटके हुए हैं , एक बड़ा हार कंधो से झूलता हुआ करधनी को छूता हुआ अंकित हैं। मूर्ति की बनावट व अलंकरणों के अधार पर यह एक देवी की प्रतिमा है, जो अत्यन्त आकर्षक है। वस्तुतः मातृ देवी की उपासना की परम्परा सिंधु घाटी के अतिरिक्त **मिस्त्र , मेसोपोटामिया , ईरान , यूनान और भूमध्य सागर** तक अनेक प्राचीन देश में प्रचलित रही। भारतीय साहित्य में मातृ देवी को देवों की माता **'अदिति'** कहा गया है, जो आगे चलकर **श्री लक्ष्मी** के रूप में स्थापित हुई ।

(चित्र संख्या 01)

टेराकोटा मातृ देवी मोहनजोदड़ो और हड़प्पा

(चित्र संख्या 02)

नारी की मृण्मूर्ति मोहनजोदड़ो

https://share.google/DCsXOKTgAlXm4NpvI
https://share.google/images/sroUVUgsBxwjIRQV4

बौद्ध काल –

भगवान बुद्ध का युग ऐसा युग रहा है, जहाँ पुरूषों को एकीकृत व्यकित्व के पूरक पहलुयों के तौर पर **करूणा व बुद्ध** के रूप में देखा गया है। वे महिलाओं को सैद्धांतिक रूप से पुरूषों के समान समझते थें। बुद्ध ने नारी **को ज्ञानी , मातृत्व , सृजनात्मक , भद्र ,** सहिष्णु के रूप में स्वीकार किया है।

विनय पिटक में यह पर्याप्त प्रमाण है कि महिलाएँ मठीय समूह उपस्थित थी, वरन् कर्ता व शिक्षक के रूप में भी नारी को प्रमुखाता व सम्मानजनक स्थान प्राप्त है। इस काल में नारी की स्थिति मुख्य रूप से प्रधान रही है। अतः बुद्ध के द्वारा राजा पसेनजित को कहे गए शब्दों से यह सिद्ध होता है कि [2]**"जब वह यह समाचार सुन कर दुखी हुआ कि उसकी पत्नी ने पुत्र नहीं पुत्री को जन्म दिया है , तब बुद्ध ने उसे कहा कि पुत्री वास्तव में ज्ञानी व गुणी बनकर पुत्र से भी अधिक अच्छी सन्तान सिद्ध हो सकती है।"**[2] वस्तुतः यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि भिक्षुणी संघ की स्थापना में बुद्ध ने महिलाओं जिस प्रकार धर्म परायण का अवसर प्रदान किया है वह विश्व के इतिहास एंव आने वाले समय तक अद्वितीय रहेगी। परन्तु हम देखे तो आज समाज में एक हिस्सा ऐसा भी है, जिसमें नारी की शक्तियों को दबाया जाता है, उसे पुरूषों से पीछे समझा जाता है, परन्तू इस शोध कार्य से मेरा प्रयास यही है कि हमें इस हिस्से को भी समाप्त करना होगा , जहाँ पर आज भी कुछ महिलाएँ अपनी कलात्मक शक्तियों को समाज के डर से प्रस्तुत करने में असमर्थ हैं। अतः यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि नारी समाज के लिए वह गौरवमयी शक्ति है जिसके अभाव में समाज एंव संस्कृति का कोई अस्तित्व नहीं हैं। बौद्ध धर्म परम्परा में यह कहा गया है कि–

[3]" इत्थिमाातो नो किं कथिरा चित्तम्हि सुसमाहिते। "[3]

अर्थात् **जब हमारा चित्त सुसमाहित है , तो स्त्री भाव हमारा क्या अहित करेगा।** इस प्रकार हम बौद्ध कला में नारी चित्रों की बात करें तो पाल शैली में मुख्य रूप से हिन्दू देवी – देवताओं , अवलोकितेश्वर आदि का वर्णन मिलता है, जिसमें ' **अवलोकितेश्वर एक ब्रह्मांडीय महेश्वर** ' **(चित्र संख्या 03)** के रूप में चित्रित है, जो विभिन्न महायान स्त्रोतों के अनुसार हिन्दु देवताओं को अवलोकितेश्वर का अवतार माना जाता है। **उदाहरणार्थ –** कारणव्यूहसूत्र (चौथी – पाँचवीं शताब्दी ई० पू०) में विष्णु , शिव , ब्रह्मा और सरस्वती नामक सार्वभौमिक देवताओं को अवलोकितेश्वर बोधिसत्व के शरीर से प्रकट दर्शाय गया है। अतः मुख्य रूप से देवी सरस्वती उनके श्वान दातों से उत्पन्न हुई है। हम देखे तो इस चित्र में भी देवताओं के साथ देवी का अंकन प्राप्त होता है, जिससे यह सिद्ध होता है कि नारी सर्वांगींण है, जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

(चित्र संख्या 03)

सृष्टि कर्ता लोकेश्वर (सृष्टि की प्रक्रिया में अवलोकितेश्वर)

https://share.google/XWwIC5JWqPDnAb5dz

राजस्थानी चित्रकला में नारी सौंदर्य –

भारतीय चित्रकला के इतिहास में अपना **वैशिष्ट्यपूर्ण एंव सौंदर्य भाव अलंकरणयुक्त** से परिपूर्ण राजस्थानी शैली समकक्ष शैलियों से प्रभावित होने पर भी चित्रकला में स्त्री सौंदर्य को मौलिक स्थान प्रदान किया है। अतः राजस्थानी चित्रकला , भारतीय लघु कला का एक प्रतिष्ठित रूप है, जिसमें भारतीय संस्कृति , भावनाओं और सौंदर्यशास्त्र के सार को जीवंतता से चित्रित करती है। राजस्थानी शैली में , किशनगढ शैली नारी चित्रण के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जिसमें मुख्य रूप से **बनी ठनी (चित्र संख्या 04)** का वर्णन है, जो नारी सौंदर्य को एक आदर्श रूप में प्रतिनिधित्व करती है। चित्र में मेहराब दार भौहें , बादाम के आकार में आँखे इस चित्र की प्रमुख विशेषता है। नागरीदास की कविताओं को आधार बनाकर बनी ठनी के रूप में सौंदर्य को चित्रित करने का श्रेय **मोरध्वज , निहालाचंद** को जाता है। हम देखे तो राजस्थानी कला नारी सौंदर्य के साथ–साथ स्त्रीत्व के सामाजिक आदर्शों को भी दर्शाती है।

(चित्र संख्या 04)

किशनगढ राधा (बनी – ठनी), निहालचंद

https://share.google/dQEwpmpr76n7SWrHm

पहाड़ी चित्र शैली में नारी शक्ति –

यह सत्य है कि पहाडी कला में सौंदर्य की अभिव्यक्ति नारी के अध्ययन से की गई है , इसीलिए हम कह सकते हैं कि चित्रकारों ने नारी की भी उपासना की है इस शैली में चित्रित लघु चित्रों के नारी अंकन में सौंदर्य के ऐसे आयाम प्रस्तुत किए है, जो अद्वितीय है। अतः पहाड़ी चित्रकार ईश्वर की श्रेष्ठतम कृति नारी के प्रति सदैव लिप्त रहे और उन्होने नारी चित्रण में नारी जन्य समस्त विशेषताओं को प्रतिपादित करके अपनी कला को उत्कृष्ट बनाया।

मध्य काल –

मध्य युग में नारी का विकास साहित्य कला के क्षेत्र में हुआ। परन्तु दर्शन , राजनीति विज्ञान एंव राज्य कौशल से वे दूर थी। उनकी देह का उपयोग केवल कूटनीति में हुआ। **सती प्रथा , पर्दा प्रथा , नारी शिशु हत्या** द्वारा महिलाओं का दमन होता रहा है। **मुगल काल , राजस्थानी , पहाड़ी एंव कम्पनी शैली** में कलाकार अपने आश्रयदाता के आधीन रहकर ही चित्र अंकित करत थें। उन्होने कभी स्वतंत्र रूप से अपने विचार प्रकट नहीं किया, क्योंकि उनका पूर्ण समय अपने आश्रयदाता की प्रशंसा और उनको प्रसन्न करने एंव अनुकूल चित्र बनाने में व्यतीत होता था। अतः स्त्रियाँ घर से बाहर नहीं निकलती थी **, पर्दा प्रथा जोरो** पर था , **परन्तु विवाह , धार्मिक अनुष्ठान तथा उत्सव पर रंगोली , कोहबर आदि सामाजिक स्तर** पर बनाई जाती थी ।

हम देखे तो इसका स्वरूप हमें लोक कल की परम्परा में बखूबी देखने को मिलता है, जिसकी उत्पत्ति नारी से ही मानी गई है, क्योंकि हर लोक कला की अपनी एक निजी परम्परा होती है, जिसे प्रारम्भ करने में महिलाओं का ही योगदान रहा है। इसीलिए हमें एक नजर लोक कला की संस्कृति और परम्परा की ओर भी डालनी होगी। क्योंकि लोक कला में अनेक ऐसी महिला कलाकार है, जिन्होने नारी शक्ति के स्वरूप को चरम उत्कर्ष तक पहुँचाने का प्रयास किया।

प्राचीन काल से ही विभिन्न घरों , आंगनों की भित्तियों पर स्त्रियों द्वारा चित्रों को चित्रित करने का उदाहरण प्राप्त है। इसीलिए अगर हम यह कहे कि इस लोक कला को जीवित रखने में मुख्य रूप से नारी का योगदान रहा है तो यह असत्य नहीं होगा। लोक परम्परा में मिथिला क्षेत्र सम्पूर्ण भारत में कला संस्कृति का केंद्र रहा है और कहा जाता है कि राजा जनक की पुत्री के विवाह के समय इस पूरी नगरी को यहाँ की स्त्रियों ने चित्रमय बना दिया , जो समाज में एक नारी के लिए बड़े गौरव और उत्साह की बात है, क्योंकि नारी को देवी का स्वरूप माना गया है। और हमारे हिंन्दू धर्म में यह मान्यता है कि जब एक पुत्री का जन्म होता है, तो उसे देवी लक्ष्मी का स्वरूप मानते है। **सरस्वती , लक्ष्मी , राधा , पावर्ती , दुर्गा** आदि अन्य देवियाँ नारी पहलू और ब्रह्मा के रूप में ज्ञात सर्वोत्तम शक्ति दोनो का प्रतिनिधित्व करती है। **ऋग्वेद** में नारी को **महिमाता** कहा गया है – जिसका अर्थ है – **महान माता।**

यह सत्य है कि विश्व में नारी शक्ति के प्रति जो अवधारणा बनाई गई है , उसके केंद्र में समाजशास्त्री दृष्टि प्रमुख रही है। इसीलिए नारी के सौंदर्य एंव स्वरूपों को जानने के पावन पर्व पर भी एक दृष्टि डालनी होगी जो नवदुर्गा का स्वरूप है। हिंदू धर्म एंव सामाजिक संस्कृति में नारी को नवदुर्गा का स्वरूप माना जाता

है। नवरात्री हिंदू त्यौहार है, जो देवी दुर्गा की पूजा के लिए समर्पित है। मार्कंडेय पुराण में देवी महात्म्य में काल्पनिक आयु के आधार पर दुर्गा को संध्या , सरस्वती , चंडिका , गौरी , महालक्ष्मी , ललित आदि अनेक नाम प्रदान किए गए है, जो नारी शक्ति का श्रेष्ठ उदाहरण है।

नवरात्रि नवदुर्गा में नारी शक्ति के स्वरूप का अंकन –

नवरात्रि की अवधारणा हम विभिन्न स्वरूपों में सकते हैं , जैसे महिषासुर का वध करना जल देवों के लिए संभव नहीं हो पाया था, तब उन्होने शक्ति की आराधना की थी और माँ दुर्गा ने ही महिषासुर जैसे राक्षस का वध करके इस पृथ्वी की रक्षा की थी। जिसका प्रमाण हमें पहाडी शैली की उपशैली गूलेर शैली की **महिषासुर मर्दिनी (चित्र संख्या 05)** में दृष्टिगत होती है।

(चित्र संख्या – 05)

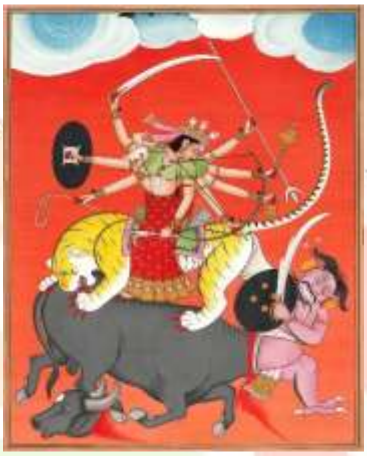

महिषासुर मर्दिनी, गलेर शैली

https://share.google/tCDJogGg7JZfsI7yU

रक्तबीज (चित्र संख्या – 06) नामक राक्षस को नष्ट करने के लिए यही नारी खप्पर धारणी का रूप धारण करती है,जिसमें नारी शक्ति के महत्व को मुख्य रूप से दर्शाया गया है।

(चित्र संख्या – 06)

रक्तबीज

पौराणिक आख्यानों में शक्ति के क्रियात्मक मूल स्वरूपों को ही **सरस्वती , लक्ष्मी और दुर्गा** के मानवीय रूपों के माध्यम से अनेक गुणों को क्रिया सहित व्यक्त करने का प्रयास किया । समाज में भी सभी जैव सम्बंध नारी पर ही टिका है, जैसे रिश्तों का फैलाव , घर परिवार की समस्त संकल्पनाएँ , नारियों के कारण

ही अस्तित्व में आई है। परन्तु पश्चिम की मानसिकता के मायाजाल के कारण स्वयं को केवल आधी आबादी मानने लगी, जबकि वह तो समस्त आबादी की जन्मदात्री है। इसीलिए माता होना नारी की सार्थकता और माँ कहलाना उसका सर्वोच्च संबोधन है। उदाहणार्थ – बंगाल में छोटी – छोटी कन्याओं को भी माँ कहकर पुकारा जाता है। जिसका चैत्र नवरात्रि के नौ दिनों में आदिशक्ति माता दुर्गा के नौ रूपों की भी पूजन की जाती है, जिन्हें **नवदुर्गा (चित्र संख्या – 07)** के नाम से जाना जाता है। अतः नवदुर्गा के अलग – अलग नाम से देवी की शक्तियों एंव स्वरूपों का वर्णन किया गया है।

प्रथम रूप – शैलपुत्री , द्वितीय रूप – ब्रह्मचारिणी , तृतीय रूप – चंद्रघण्टा , चतुर्थ रूप – कुष्मांडा देवी , पंचम रूप – स्कंदमाता माता , छठा रूप – कत्यायनी देवी , सातवां रूप – काल रात्रि , आठवां रूप – महागौरी , नौवां रूप – सि़द्धिदात्री

(चित्र संख्या – 07)

नवदुर्गा

<u>आधुनिक काल में नारी शक्ति के सौंदर्य एंव स्वरूप –</u>

आधुनिक काल में नारी शक्ति का जीता जागता प्रमाण हम भारतीय महिला कलाकारों में देख सकते हैं, जिन्होने अपने अथक प्रयासों से समाज में अपनी एक पहचान बनाई और निरंतर समाज में हो रहे परिवर्तन जैसे चुनौतियों का समना किया। महिला कलाकारों में सर्वप्रथम सुनयनी देवी का नाम आता है। तत्पश्चात् उल्लेखनीय चित्रकार अमृता शेरगिल का। इनके अतिरिक्त **शोभा ब्रूटा , अंजलि इला मेनन , वसुंधरा तिवारी , मृणालिनी मुखर्जी ,अर्पिता सिंह** आदि कलाकारों ने नारी शक्ति के **सौंदर्य , पीडा , करूणा** एंव उनके स्वरूपों को अपने चित्रों के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत किया। गोगी सरोज पाल की प्रसिद्ध कृति **इंटरनल बर्ड/शाश्वत पक्षी , (चित्र संख्या 08)** जिसमें एक महिला के कधों पर पंख एव पक्षी के समान पैर अंकित है। चित्र को देखकर यह अभास होता है कि मानो नारी को भी उडने का अधिकार है। अतः चित्र का विषय अत्यधिक आकर्षक है। शाश्वत पक्षी **अमरता , पुनरूत्थान एंव शाश्वत जीवन का प्रतीक** है। इसी प्रकार नारी की झलक अमृता शेरगिल के चित्र **भारत माता (चित्र संख्या 09)** में भी देख सकते है , जिसको गोद में एक शिशु पुत्र और दाहिनी और एक छोटी पुत्री है। चित्र में भारत माता एक गरीब किसान माँ रूप में चित्रित हैं, जो सामाजिक गरीबी और दुख से ग्रसित है। परन्तु फिर भी वह अपने बच्चों के लिए हर स्थिति में तत्पर रहती है। अतः हम देखे तो नारी की शक्ति का आभास हमें ऐसी ही परिस्थिति में होता है। संभवतः इसीलिए इस चित्र का नाम **मदर इण्डिया (भारत माता)** रखा गया।

(चित्र संख्या 08)

इंटरनल बर्ड/शाश्वत पक्षी
गोगी सरोजपाल

(चित्र संख्या 09)

मदर इण्डिया
अमृता शेरगिल

https://share.google/hqMSwDjztgvsWQvLj

https://share.google/3grjLVekcPNQ3d1E

कलात्मक दृष्टिकोण से देखे तो कुछ ऐसे भी कलाकार है, जिन्होंने नारी के सौंदर्य को बखूबी पहचान है और देवी का दर्जा देकर उनके स्वरूपों को उद्घघाटित किया है। यह सत्य है कि भारत वासी लोग भारत को भारत माता कहते है,जो नारी शक्ति का प्रतीक है। इसी शीर्षक को लेकर विभिन्न कलाकारों ने समाज के समक्ष अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है, जैसे राजा रवि वर्मा , अवनींद्रनाथ टैगोर , शोभा सिंह , एम. एफ. हुसैन , एम. एल शर्मा आदि।

राजा रवि वर्मा ने **भारत माता (चित्र संख्या –10)** को एक माँ के रूप में प्रस्तुत किया है, इन्होंने चित्र में एक नारी को खडी दर्शाया है, जो युद्ध और शांति के प्रतीक के रूप में (तीर और ताड का पत्ता) रखती हैं। अतः यह उनकी शक्ति को दर्शाता है।

(चित्र संख्या –10)

राजा रवि वर्मा (भारत माता)

https://share.google/DfN1HkbKDYHsayoHy

भारत माता (चित्र संख्या – 11) के रूप में कल्पना करने वाले पहले कलाकार **अवनींद्रनाथ टैगोर** रहे। चित्र में नारी शक्ति भारत माता को भगवा वस्त्र पहने एक दिव्य बंगाली किसान नारी को पौराणिक देवी परम्परा की चार भुजाओं के रूप में दर्शाया गया है। यह सत्य है कि स्वदेशी भावना एंव बंगाल के विभाजन

के विरूद्ध सार्वजनिक आक्रोश ने अवनींद्रनाथ टैगोर को इस विषय को अपनाने के लिए प्रेरित किया। अतः यह कहना भी असत्य नहीं होगा कि भारत को भी भारत माता का दर्जा दिया गया , जो नारी का ही स्वरूप है। और धरती को भी हम माँ कहते हैं, वस्तुतः नारी शक्ति की कल्पना का कोई सीमित आकार नहीं है जिसे कलाकारों ने बखूबी समझा। साथ ही अपने भावपूर्ण कल्पना के माध्यम से प्रतीकात्मक मात्र आकृति और भारतीय राष्ट्र के अवतार के रूप मे भारत माता की भूमिका को उजागर किया जो भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है।

(चित्र संख्या – 11)

भारत माता, अवनींद्रनाथ टैगोर

https://share.google/X3hkJqsUeFocHlJJH

निष्कर्ष –

नारी का अंकन प्राचीन काल में प्रागैतिहासिक काल से देखने को मिलता है। इसी के साथ आगे चलकर नारी का अंकन सिंधु घाटी की सभ्यता में परिलक्षित होता है जो विभिन्न रूप धारण करती है, जिसकी शक्ति कल्पना के भी परे है। मोहनजोदड़ो एंव हड़प्पा संस्कृति में मातृदेवी प्राप्त हुई है। भारतीय साहित्य में नारी को देवों की माता अदिति कहा गया है, जिन्हें आगे चलकर श्री लक्ष्मी के रूप में स्थापित किया गया। भारतीय कला समाज में नारी शक्ति का स्वरूप हम लोक कला परम्परा में देख सकते हैं, जो लोक कलाएँ हमारे पूर्वजों की धरोहर है। साथ ही हिन्दू धर्म के पावन पर्व नवरात्रि के नवदुर्गा के स्वरूपों से नारी शक्ति को पूर्ण रूप से ज्ञात किया जा सकता है। आगे चलकर इसी परम्परा एंव संस्कृति से प्रभावित होकर भारतीय आधुनिक कलाकारों ने भी नारी शक्ति को विभिन्न प्रतीकों के साथ अपनें चित्रों में उतारा है। अमृता शेरगिल, राजा रवि वर्मा , अबनींद्रनाथ टैगोर , शोभा सिंह , एम. एफ.हुसैन आदि।

सन्दर्भ सूची –

1 भारती कासलीवाल मीनाक्षी, (2019) भारतीय मूर्तिशिल्प एंव स्थापत्य कला, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पेज नं – 23

2 सिंघल डॉ.रंजना रानी(जनवरी 2019) बौद्ध धर्म में स्त्रियों की भूमिका, दिल्ली विश्वविद्यालय ,दिल्ली ,वॉल्यूम 04 इसू 01 ISBN - 2455 -3085

3 प्रताप डॉ. रीता (2016) भारतीय चित्रकला एंव मूर्तिकला का इतिहास , राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी ,पेज नं – 205

4 कुशवाहा खुशबू, प्रो. राज किशोरी सिह (2025) भारतीय कला में भारत माता की चित्रात्मक अभिव्यक्ति , अक्षर वार्ता अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका , वॉल्यूम XXI ,issue no- XI , ISSN-2349-7521

5 उज्जवल, एस कैडोड, सौंदर्य की दृष्टि से राजस्थानी लघु चित्रों में नारी चित्रण और हावभाव

6 दीक्षित स्वाभी , राजस्थानी चित्रकला में नारी सौंदर्य का अध्ययन , मंगलायन विश्वविद्यालय ,अलीगढ ,उ.प्र. ISBN 2148-2403

7 शर्मा पुनीता (2021) पहाडी चित्र शैली में नारी सौंदर्य रूपांकन ,गोकुलदास हिंदू गर्ल्स कॉलेज ,मुरादाबाद , वॉल्यूम 06 issue 09 ISBN 2456-5474

8 कुशवाहा खुशबू (2024) भारतीय कला में नारी शक्ति का प्रतीक दुर्गा के स्वरूप का वैज्ञानिक महत्व , सी. एस.जे.एम.यू कानपुर विश्वविद्यालय ISBN 978-81-962380-49

9 कुशवाहा खुशबू, प्रो. राज किशोरी सिह (2025) लोक कला को जीवित रखने में महिला कलाकारों का योगदान , ISBN 978-81-959222-8-4

10 शोध ग्रंथ– श्रीवास्तव,नवीन(2019) आधुनिक भारतीय चित्रकला में महिला कलाकारों का योगदान

11 https://share.google/DCsXOKTgAlXm4NpvI

12 https://share.google/images/sroUVUgsBxwjIRQV4

13 **https://share.google/XWwIC5JWqPDnAb5dz**

14 **https://share.google/dQEwpmpr76n7SWrHm**

15 https://share.google/tCDJogGg7JZfsI7yU

16 https://share.google/5dIHhw8OOlNbJAWwP

17 **https://share.google/hqMSwDjztgvsWQvLj**

18 **https://share.google/3grjLVekcPNQ3d1Ej**

19 **https://share.google/DfN1HkbKDYHsayoHy**

20 **https://share.google/X3hkJqsUeFocHlJJH**